

मधुशाला

मृदु भावों के अंगूरों की
आज बना लाया हाला,
प्रियतम, अपने ही हाथों से
आज पिलाऊँगा प्याला;
पहले भोग लगा लूँ तुझको
फिर प्रसाद जग पाएगा;
सबसे पहले तेरा स्वागत
करती मेरी मधुशाला । । 1 । ।

प्यास तुझे तो, विश्व तपाकार
पूर्ण निकालूँगा हाला,
एक पौंव से साकी बनकर
नाचूँगा लेकर प्याला;
जीवन की मधुता तो तेरे
ऊपर कब का वार चुका
आज निछावर कर दूँगा मैं
तुझ पर जग की मधुशाला । । 2 । ।

प्रियतम, तू मेरी हाला है,
मैं तेरा प्यासा प्याला,
अपने को मुझमें भरकर तू
बनता है पीनेवाला;
मैं तुझको छक छलका करता,
मस्त मुझे पी तू होता;
एक दूसरे को हम दोनों
आज परस्पर मधुशाला । । 3 । ।

भावुकता अंगूर लता से
खींच कल्पना की हाला,
कवि साकी बनकर आया है
भरकर कविता का प्याला;
कभी न कण भर खाली होगा,
लाख पिँ, दो लाख पिँ !
पाठकगण हैं पीनेवाले
पुस्तक मेरी मधुशाला । । 4 । ।

मधुर भावनाओं की सुमधुर
नित्य बनाता हूँ हाला



भरता हूँ इस मधु से अपने
अंतर का प्यासा प्याला;
उठा कल्पना के हाथों से
स्वयं उसे पी जाता हूँ;
अपने ही में हूँ मैं साकी,
पीनेवाला, मधुशाला । । 5 । ।

मदिरालय जाने को घर से
चलता है पीनेवाला,
' किस पथ से जाऊँ? ' असमंजस
में है वह भोलाभाला;
अलर्गअलग पथ बतलाते सब
पर मैं यह बतलाता हूँ....
'राह पकड़ तू एक चला चल,
पा जाएगा मधुशाला । ' । 6 । ।

चलने ही चलने में कितना
जीवन, हाय, बिता डाला!
' दूर अभी है ' , पर, कहता है
हर पथ बतलाने वाला;
हिम्मत है न बढूँ आगे को
साहस है न फिरूँ पीछे;
किंकर्तव्यविमूढ़ मुझे कर
दूर खड़ी है मधुशाला । । 7 । ।

मुख से तू अविरत कहता जा
मधु, मदिरा, मादक हाला,
हाथों में अनुभव करता जा
एक ललित कल्पित प्याला,
ध्यान किए जा मन में सुमधुर,
सुखकर, सुन्दर साकी का;
और बढ़ा चल, पथिक, न तुझको
दूर लगेगी मधुशाला । । 8 । ।

मदिरा पीने की अभिलाषा
ही बन जाए जब हाला,
अधरों की आतुरता में ही
जब आवासित हो प्याला,
वने ध्यान ही कर्तकरते
जब साकी साकार, सखे,
रहे न हाला, प्याला, साकी,
तुझे मिलेगी मधुशाला । । 9 । ।

सुन, कलकल, छलछल मधु
घट से गिरती प्यालों में हाला,
सुन, रूनझुन रूनझुन चल
वितरण करती मधु साकीवाला,
बस आ पहुँचे, दूर नहीं कुछ,
चार कदम अब चलना है;
चहक रहे, सुन, पीनेवाले,
महक रही, ले, मधुशाला । । 10 । ।

जलतरंग वजता, जब चुंवन
करता प्याले को प्याला,
वीणा झंकृत होती, चलती
जब रूनझुन साकीवाला,
डॉर्टडपट मधुविक्रेता की
ध्वनित पखावज करती है;
मधुरव से मधु की मादकता
और बढ़ाती मधुशाला । । 11 । ।

मेहंदीरंजित मृदुल हथेली
पर माणिक मधु का प्याला,
अंगूरी अवगुंठन डाले
स्वर्णवर्ण साकीवाला,
पाव बैजनी, जामा नीला
डाट डटे पीनेवाले;
इन्द्रधनुष से होड़ लगाती
आज रँगिली मधुशाला । । 12 । ।

हाथों में आने से पहले
नाज़ दिखाएगा प्याला,
अधरों पर आने से पहले
अदा दिखाएगी हाला,
बहुतेरे इन्कार करेगा
साकी आने से पहले;
पथिक, न घबरा जाना, पहले
मान करेगी मधुशाला । । 13 । ।

लाल सुरा की धार लपटसी
कह न इसे देना ज्वाला,
फेनिल मदिरा है, मत इसको
कह देना उर का छाला,
दर्द नशा है इस मदिरा का
विगत स्मृतियाँ साकी है;

पीड़ा में आनन्द जिसे हो,
आए मेरी मधुशाला । । 14 । ।

जगती की शीतल हार्लासी,
पथिक, नहीं मेरी हाला,
जगती के ठंडे प्यार्लेसा,
पथिक, नहीं मेरा प्याला,
ज्वार्लसुरा जलते प्याले में
दग्ध हृदय की कविता हैं;
जलने से भयभीत न जो हो,
आए मेरी मधुशाला । । 15 । ।

बहती हाला देखी, देखो
लपट उठाती अब हाला,
देखो प्याला अब छूते ही
होंठ जला देनेवाला;
'होंठ नहीं, सब देह दहे, पर
पीने को दो बूँदे मिले'
ऐसे मधु के दीवानों को
आज बुलाती मधुशाला । । 16 । ।

धर्मग्रंथ सब जला चुकी है
जिसके अन्तर की ज्वाला,
मंदिर, मस्जिद, गिरजे सबको
तोड़ चुका जो मतवाला,
पंडित, मोमिन, पादरियों के
फंदों को जो काट चुका,
कर सकती है आज उसी का
स्वागत मेरी मधुशाला । । 17 । ।

लालायित अधरों से जिसने,
हाय, नहीं चूमी हाला,
हर्षविकंपित कर से जिसने,
हा, न छुआ मधु का प्याला,
हाथ पकड़ लज्जित साकी का
पास नहीं जिसने खींचा,
व्यर्थ सुखा डाली जीवन की
उसने मधुमय मधुशाला । । 18 । ।

बने पुजारी प्रेमी साकी,
गंगाजल पावन हाला,
रहे फेरता अविरत गति से
मधु के प्यालों की माला,

'और लिये जा, और पिए जा'
इसी मंत्र का जाप करे,
मैं शिव की प्रतिमा बन बैठूँ,
मंदिर हो यह मधुशाला । । 19 । ।

बजी न मंदिर में घड़ियाली,
चढ़ी न प्रतिमा पर माला,
बैठा अपने भवन मुअक्विन
देकर मस्जिद में ताला,
लुटे खजाने नरपतियों के
गिरी गढ़ों की दीवारें;
रहे मुबारक पीनेवाले,
खुली रही यह मधुशाला । । 20 । ।

बड़बड़े परिवार मिटें यों,
एक न हो रोनेवाला,
हो जाएँ सुनसान महल वे,
जहाँ थिरकतीं सुरवाला,
राज्य उलट जाएँ, भूषों की
भाग्यसुलक्ष्मी सो जाए;
जगे रहेंगे पीनेवाले,
जगा करेगी मधुशाला । । 21 । ।

सब मिट जाएँ, बना रहेगा
सुन्दर साकी, यम काला,
सूखें सब रस, बने रहेंगे,
किन्तु, हलाहल औ' हाला,
धूमधाम औ' चहर्लपहल के
स्थान सभी सुनसान बनें,
जगा करेगा अविरत मरघट,
जगा करेगी मधुशाला । । 22 । ।

बुरा सदा कहलाया जग में
वाँका, मर्दचंचल प्याला,
छैलछबीला, रसिया साकी,
अलबेला पीनेवाला;
पटे कहाँ से, मधुशाला औ'
जग की जोड़ी ठीक नहीं'
जग जर्जर प्रतिदिन, प्रतिक्षण, पर
नित्य नवेली मधुशाला । । 23 । ।

बिना पिये जो मधुशाला को
बुरा कहे, वह मतवाला,

पी लेने पर तो उसके मुँह
पर पड़ जाएगा ताला;
दासद्रोहियों दोनों में है
जीत सुरा की, प्याले की,
विश्वविजयिनी बनकर जग में
आई मेरी मधुशाला । । 24 । ।

हराभरा रहता मदिरालय,
जग पर पड़ जाए पाला,
यहाँ मुहरम का तम छाए,
यहाँ होलिका की ज्वाला;
स्वर्ग लोक से सीधी उतरी
वसुधा पर, दुख क्या जाने;
पढ़े मर्सिया दुनिया सारी,
ईद मनाती मधुशाला । । 25 । ।

एक बरस में एक बार ही
जगती होली की ज्वाला,
एक बार ही लगती बाजी,
जलती दीपों की माला;
दुनियावालो, किन्तु, किसी दिन
आ मदिरालय में देखो,
दिन को होली, रात दिवाली,
रोज मनाती मधुशाला । । 26 । ।

नहीं जानता कौन, मनुज
आया बनकर पीनेवाला,
कौन अपरिचित उस साकी से,
जिसने दूध पिला पाला;
जीवन पाकर मानव पीकर
मस्त रहे, इस कारण ही
जग में आकर सबसे पहले
पाई उसने मधुशाला । । 27 । ।

बनी रहें अंगूर लताएँ
जिनसे मिलती है हाला,
बनी रहे वह मिट्टी जिससे
बनता है मधु का प्याला,
बनी रहे वह मदिर, पिपासा
तृप्त न जो होना जाने,
बने रहें ये पीने वाले,
बनी रहे यह मधुशाला । । 28 । ।

सकुशल समझो मुझको, सकुशल
रहती यदि साकीवाला;
मंगल और अमंगल समझे
मस्ती में क्या मतवाला;
मित्रो, मेरी क्षेम न पूछो
आकर, पर मधुशाला की,
कहा करो 'जय राम' न मिलकर,
कहा करो 'जय मधुशाला' । । 29 । ।

सूर्य बने मधु का विक्रेता,
सिंधु बने घट, जल हाला,
बादल वर्नवन आए साकी,
भूमि बने मधु का प्याला,
झड़ी लगाकर वरसे मदिरा
रिमझिम, रिमझिम, रिमझिम कर,
वेलि, विटप, तृण वन में पीऊँ,
वर्षा ऋतु हो मधुशाला । । 30 । ।

तारक मणियों से सज्जित नभ
बन जाए मधु का प्याला,
सीधा करके भर दी जाए
उसमें सागरजल हाला,
मत्त समीरण साकी बनकर
अधरों पर छलका जाए,
फैले हों जो सागर तटसे;
विश्व बने यह मधुशाला । । 31 । ।

अधरों पर हो कोई भी रस
जिंदहा पर लगती हाला,
भाजन हो कोई हाथों में
लगता रक्खा है प्याला,
हर सूरत साकी की सूरत
में परिवर्तित हो जाती,
आँखों के आगे हो कुछ भी,
आँखों में हैं मधुशाला । । 32 । ।

पौधे आज बने हैं साकी
लेंले फूलों का प्याला,
भरी हुई है जिनके अन्दर
परिमलमर्धुसुरभित हाला,
मोंगमोंगकर भ्रमरों के दल
रस की मदिरा पीते हैं

झूमझपक मर्दझंपित होते,
उपवन क्या है मधुशाला । । 33 । ।

प्रति रसाल तरु सार्कीसा है,
प्रति मंजरिका है प्याला,
छलक रही है जिसके बाहर
मादक सौरभ की हाला,
छक जिसको मतवाली कोयल
कूक रही डालीडाली
हर मधुऋतु में अमराई में
जग उठती है मधुशाला । । 34 । ।

मंद झकोरों के प्यालों में
मधुऋतु सौरभ की हाला
भर्रभरकर है अनिल पिलाता
वनकर मर्धुमर्दमतवाला,
हरैहरे नव पल्लव, तरुगण,
नूतन डालें, वल्लरियाँ
छर्कछक, झुर्कझुक झूम रही हैं,
मधुवन में है मधुशाला । । 35 । ।

साकी बन आती है प्रातः
जब अरूणा ऊर्षावाला,
तारकर्मणिमंडित चादर दे
मोल धरा लेती हाला,
अगणित कर किरणों से जिसको
पी, खग पागल हो गाते;
प्रति प्रभात में पूर्ण प्रकृति में
मुग्धरित होती मधुशाला । । 36 । ।

उतर नशा जब उसका जाता,
आती है संध्या वाला,
बड़ी पुरानी, बड़ी नशीली
नित्य ढला जाती हाला;
जीवन के संताप शोक सब
इसको पीकर मिट जाते;
सुर्गसुप्त होते मर्दलोभी
जागृत रहती मधुशाला । । 37 । ।

अंधकार है मधुविक्रेता
सुन्दर साकी, शशिवाला
किरणकिरण में जो छलकाती
जाम जुम्हाई का आला,

पीकर जिसको चेतनता खो
लेने लगते हैं झपकी
तारकदर्लसे पीनेवाले;
रात नहीं है, मधुशाला । । 38 । ।

किसी ओर मैं आँखें फेरूँ,
दिखलाई देती हाला
किसी ओर मैं आँखें फेरूँ,
दिखलाई देता प्याला,
किसी ओर मैं देखूँ, मुझको
दिखलाई देता साकी
किसी ओर देखूँ, दिखलाई
पड़ती मुझको मधुशाला । । 39 । ।

साकी बनकर मुरली आई
साथ लिए कर में प्याला,
जिनमें वह छलकाती लाई
अधरसुधारस की हाला;
योगिराज कर संगत उसकी
नटवर नागर कहलाए;
देखो कैसोंकैसों को है
नाच नचाती मधुशाला । । 40 । ।

वादक बन मधु का विक्रेता
लाया सुरसुमधुरहाला,
रागिनियाँ बन साकी आई
भरकर तारों का प्याला,
विक्रेता के संकेतों पर
दौड़ लयों, आलापों में
पान कराती श्रोतागण को;
झंकृत वीणा मधुशाला । । 41 । ।

चित्रकार बन साकी आता
लेकर तूली का प्याला
जिसमें भरकर पान कराता
वह बहु रसरंगी हाला,
मन के चित्र जिसे पीपीकर
रंगविरंगे हो जाते,
चित्रपटी पर नाच रही है
एक मनोहर मधुशाला । । 42 । ।

घर्नश्यामल अंगूर लता से
खिंचखिंच यह आती हाला,

अरुणकमलकोमल कलियों की
प्याली, फूलों का प्याला,
लोल हिलोरें साकी वर्नवन
माणिक मधु से भर जातीं,
हंस मत्त होते पीपीकर
मानसरोवर मधुशाला । । 43 । ।

हिम श्रेणी अंगूर लतासी
फैली, हिम जल है हाला
चंचल नदियाँ साकी बनकर,
भरकर लहरों का प्याला
कोमल कूर्लकरों में अपने
छलकातीं निशिदिन चलतीं,
पीकर खेत खड़े लहराते,
भारत पावन मधुशाला । । 44 । ।

वीर सुतों के हृदयरक्त की
आज बना रक्तिम हाला,
वीर सुतों के वर शीशों का
हाथों में लेकर प्याला,
अति उदार दानी साकी है
आज बनी भारतमाता,
स्वतंत्रता है तृषित कालिका,
बलिवेदी है मधुशाला । । 45 । ।

दुतकारा मस्जिद ने मुझको
कहकर है पीनेवाला,
टुकराया ठाकुरद्वारे ने
देख हथेली पर प्याला,
कहाँ ठिकाना मिलता जग में
भला अभागे काफिर को?
शरणस्थल बनकर न मुझे यदि
अपना लेती मधुशाला । । 46 । ।

पथिक बना मैं घूम रहा हूँ,
सभी जगह मिलती हाला,
सभी जगह मिल जाता साकी,
सभी जगह मिलता प्याला,
मुझे ठहरने का, हे मित्रों,
कष्ट नहीं कुछ भी होता,
मिले न मंदिर, मिले न मस्जिद,
मिल जाती है मधुशाला । । 47 । ।

सजें न मस्जिद और नमाजी
कहता है अल्लाताला,
सजधजकर, पर, साकी आता,
बन ठनकर, पीनेवाला,
शेख, कहाँ तुलना हो सकती
मस्जिद की मदिरालय से
चिरविधवा है मस्जिद तेरी,
सर्दामुहागिन मधुशाला । । 48 । ।

बजी नफीरी और नमाजी
भूल गया अल्लाताला,
गाज गिरी, पर ध्यानसुरा में
मग्न रहा पीनेवाला;
शेख, बुरा मत मानो इसको,
साफ कहूँ तो मस्जिद को
अभी युगों तक सिखलाएगी
ध्यान लगाना मधुशाला । । 49 । ।

मुसल्मान औ' हिन्दू हैं दो,
एक, मगर, उनका प्याला,
एक, मगर, उनका मदिरालय,
एक, मगर, उनकी हाला;
दोनों रहते एक न जब तक
मस्जिदमन्दिर में जाते;
वैर बढ़ाते मस्जिदमन्दिर
मेल कराती मधुशाला । । 50 । ।

कोई भी हो शेख नमाजी
या पंडित जपता माला,
वैर भाव चाहे जितना हो
मदिरा से रखनेवाला,
एक बार बस मधुशाला के
आगे से होकर निकले,
देखूँ कैसे थाम न लेती
दामन उसका मधुशाला । । 51 । ।

और रसों में स्वाद तभी तक,
दूर जभी तक है हाला,
इतरा लें सब पात्र न जब तक,
आगे आता है प्याला,
कर लें पूजा शेख, पुजारी
तब तक मस्जिदमन्दिर में

घूँघट का पट खोल न जब तक
झाँक रही है मधुशाला । । 52 । ।

आज करे परहेज जगत, पर
कल पीनी होगी हाला,
आज करे इन्कार जगत पर
कल पीना होगा प्याला;
होने दो पैदा मद का महमूद
जगत में कोई, फिर
जहाँ अभी है मन्दिरमस्जिद
वहाँ बनेगी मधुशाला । । 53 । ।

यज्ञअग्निसी धधक रही है
मधु की भट्टी की ज्वाला,
ऋषिसा ध्यान लगा बैठा है
हर मदिरा पीने वाला,
मुर्निकन्याओंसी मधुघट ले
फिरतीं साकीवालाएँ
किसी तपोवन से क्या कम है
मेरी पावन मधुशाला । । 54 । ।

सोमसुरा पुरखे पीते थे,
हम कहते उसको हाला,
द्रोणकलश जिसको कहते थे,
आज वही मधुघट वाला;
वेदविहित यह रस्म न छोड़ो,
वेदों के ठेकेदारो,
युगयुग से है पुजती आई
नई नहीं है मधुशाला । । 55 । ।

वही वारूणी जो थी सागर
मथकर निकली अब हाला,
रंभा की संतान जगत में
कहलाती 'साकीवाला';
देवअदेव जिसे ले आए,
संतमहंत मिटा देंगे!
किसमें कितना दर्मग्रम, इसको
खूब समझती मधुशाला । । 56 । ।

कभी नहीं सुन पड़ता, 'इसने,
हा, छू दी मेरी हाला,
कभी न कोई कहता, 'उसने
जूठा कर डाला प्याला;

सभी जाति के लोग यहाँ पर
साथ बैठकर पीते हैं;
सौ सुधारकों का करती है
काम अकेली मधुशाला । । 57 । ।

श्रम, संकट, संताप, सभी तुम
भूला करते पी हाला,
सबक बड़ा तुम सीख चुके यदि
सीखा रहना मतवाला;
व्यर्थ बने जाते हो हरिजन,
तुम तो मधुजन ही अच्छे;
टुकराते हरिमंदिरवाले,
पलक विछाती मधुशाला । । 58 । ।

एक तरह से सबका स्वागत
करती है साकीवाला,
अर्जविज्ञ में है क्या अन्तर
हो जाने पर मतवाला,
रंकराव में भेद हुआ है
कभी नहीं मदिरालय में,
साम्यवाद की प्रथम प्रचारक
है यह मेरी मधुशाला । । 59 । ।

बार बार मैंने आगे बढ़,
आज नहीं माँगी हाला,
समझ न लेना इससे मुझको
साधारण पीने वाला,
हो तो लेने दो ऐ साकी,
दूर प्रथम संकोचों को;
मेरे ही स्वर से फिर सारी
गूँज उठेगी मधुशाला । । 60 । ।

कल? कल पर विश्वास किया कब
करता है पीनेवाला
हो सकते कल कर जड़ जिनसे
फिरफिर आज उठा प्याला,
आज हाथ में था, वह खोया,
कल का कौन भरोसा है;
कल की हो न मुझे मधुशाला
काल कुटिल की मधुशाला । । 61 । ।

आज मिला अवसर, तब फिर क्यों
मैं न छकूँ जी भर हाला,

आज मिला मौका, तब फिर क्यों
ढाल न लूँ जी भर प्याला,
छेड़छाड़ अपने साकी से
आज न क्यों जी भर कर लूँ,
एक बार ही तो मिलनी है
जीवन की यह मधुशाला । । 62 । ।

आज सजीव बना लो, प्रेयसि,
अपने अधरों का प्याला,
भर लो, भर लो, भर लो इसमें
यौवर्नमधुरस की हाला,
और लगा मेरे होठों से
भूल हटाना तुम जाओ,
अथक वनूँ मैं पीनेवाला,
खुले प्रणय की मधुशाला । । 63 । ।

सुमुखि, तुम्हारा सुन्दर मुख ही
मुझको कंचन का प्याला,
छलक रही है जिसमें माणिक्य
रूप मधुर मादक हाला,
मैं ही साकी बनता, मैं ही
पीनेवाला बनता हूँ,
जहाँ कहीं मिल बैठे हर्मतुम
वहीं हो गई मधुशाला । । 64 । ।

दो दिन ही मधु मुझे पिलाकर
ऊब उठी साकीवाला,
भरकर अब खिसका देती है,
वह मेरे आगे प्याला,
नाज़, अदा, अंदाजों से अब,
हाय, पिलाना दूर हुआ,
अब तो कर देती है केवल
फर्जअदाई मधुशाला । । 65 । ।

छोर्टेसे जीवन में कितना
प्यार करूँ पी लूँ हाला,
आने के ही साथ जगत में
कहलाया 'जानेवाला'
स्वागत के ही साथ विदा की
होती देखी तैयारी,
बंद लगी होने खुलते ही,
मेरी जीवन मधुशाला । । 66 । ।

क्या पीना, निर्द्वन्द्व न जब तक
ढाला प्यालों पर प्याला,
क्या जीना, निश्चित न जब तक
साथ रहे साकीवाला,
खोने का भय, हाय, लगा है
पीने के सुख के पीछे
मिलने का आनंद न देती
मिलकर के भी मधुशाला । । 67 । ।

मुझे पिलाने को लाए हो
इतनी थोड़ीसी हाला!
मुझे दिखाने को लाए हो
एक यही छिछला प्याला!
इतनी पी जाने से अच्छा
सागर की ले प्यास मरूँ;
सिंधुतृषा दी किसने रचकर
बिंदु बराबर मधुशाला? । । 68 । ।

क्या कहता है, रह न गई अब
तेरे भाजन में हाला,
क्या कहता है, अब न चलेगी
मादक प्यालों की माला;
थोड़ी पीकर प्यास बढ़ी तो
शेष नहीं कुछ पीने को;
प्यास बुझाने को बुलवाकर
प्यास बढ़ाती मधुशाला । । 69 । ।

लिखी भाग्य में जितनी बस
उतनी ही पाएगा हाला,
लिखा भाग्य में जैसा बस
वैसा ही पाएगा प्याला
लाख पटक तू हार्थपाँव, पर
इससे कब कुछ होने का,
लिखी भाग्य में जो तेरे बस
वही मिलेगी मधुशाला । । 70 । ।

कर ले, कर ले कंजूसी तू
मुझको देने में हाला,
दे ले, दे ले तू मुझको बस
यह टूटाफूटा प्याला;
मैं तो सब इसी पर करता,
तू पीछे पछताएगी;

जब न रहूँगा मैं, तब मेरी
याद करेगी मधुशाला । । 71 । ।

ध्यान मान का, अपमानों को
छोड़ दिया जब पी हाला,
गौरव भूला, आया कर में
जब से मिट्टी का प्याला,
साकी की अंदार्जभरी
झिड़की में क्या अपमान धरा,
दुनिया भर की ठोकर खाकर
पाई मैंने मधुशाला । । 72 । ।

क्षीण, क्षुद्र, क्षणभंगुर दुर्बल
मानव मिट्टी का प्याला,
भरी हुई है जिसके अन्दर
कर्टुमधु जीवन की हाला,
मृत्यु बनी है निर्दय साकी
अपने शर्तशत कर फैला,
काल प्रबल है पीनेवाला;
संसृति है यह मधुशाला । । 73 । ।

प्यार्लेसा बढ़ हमें किसी ने
भर दी जीवन की हाला,
नशा न भाया, ढाला हमने
लेंलेकर मधु का प्याला;
जब जीवन का दर्द उभरता
उसे दवाते प्याले से;
जगती के पहले साकी से,
जूझ रही है मधुशाला । । 74 । ।

अपने अंगूरोंसे तन में
हमने भर ली है हाला,
क्या कहते हो, शेख़, नरक में
हमें तपाएगी ज्वाला,
तब तो मदिरा खूब खिंचेगी
और पिएगा भी कोई,
हमें नरक की ज्वाला में भी
दीख़ पड़ेगी मधुशाला । । 75 । ।

यम आएगा लेने जब, तब
खूब चलूँगा पी हाला,
पीड़ा, संकट, कष्ट नरक के
क्या समझेगा मतवाला,

क्रूर, कठोर, कुटिल, कुविचारी
अन्यायी यमराजों के
डंडों की जब मार पड़ेगी,
आड़ करेगी मधुशाला । । 76 । ।

यदि इन अधरों से दो बातें
प्रेम भरी करती हाला,
यदि इन खाली हाथों का जी
पल भर बहलाता प्याला,
हानि बता, तब, तेरी क्या है,
व्यर्थ मुझे बदनाम न कर;
मेरे टूटे दिल का है बस
एक खिलौना मधुशाला । । 77 । ।

याद न आए दुखमय जीवन
इससे पी लेता हाला,
जग चिंताओं से रहने को
मुक्त, उठा लेता प्याला,
शौक, साध के और स्वाद के
हेतु पिया जग करता है,
पर मैं वह रोगी हूँ जिसकी
एक दवा है मधुशाला । । 78 । ।

गिरती जाती है दिर्नप्रतिदिन,
प्रणयिनि, प्राणों की हाला,
भग्न हुआ जाता दिर्नप्रतिदिन,
सुभगे, मेरा तर्नप्याला,
रूठ रहा है मुझसे, रूपसि
दिर्नदिन यौवन का साकी,
सूख रही है दिर्नदिन, सुंदरि,
मेरी जीवर्नमधुशाला । । 79 । ।

यम आएगा साकी बनकर
साथ लिए काली हाला,
पी न होश में फिर आएगा
सुराविसुध यह मतवाला;
यह अंतिम बेहोशी, अंतिम
साकी, अंतिम प्याला है;
पथिक, प्यार से पीना इसको,
फिर न मिलेगी मधुशाला । । 80 । ।

ढलक रही हो तन के घट से,
संगिनि, जब जीवर्नहाला,

पात्र गरल का ले जब अन्तिम
साकी हो आनेवाला,
हाथ परस भूलें प्याले का,
स्वार्दसुरा जिह्वा भूले,
कानों में तुम कहती रहना
मधुकण, प्याला, मधुशाला । । 81 । ।

मेरे अधरों पर हो अन्तिम
वस्तु न तुलसीदल, प्याला,
मेरी जिह्वा पर हो अन्तिम
वस्तु न गंगाजल, हाला,
मेरे शव के पीछे चलने
वालो, याद इसे रखना
'राम नाम है सत्य' न कहना,
कहना 'सच्ची मधुशाला' । । 82 । ।

मेरे शव पर वह रोए, हो
जिसके आँसू में हाला,
आह भरे वह, जो हो सुरभित
मदिरा पीकर मतवाला,
देँ मुझको वे कंधा जिनके
पद मर्दङ्गमग होते हों,
और जलूँ उस ठौर, जहाँ पर
कभी रही हो मधुशाला । । 83 । ।

और चिता पर जाय उँडेला
पात्र न घृत का, पर प्याला
घंट वँधे अंगूर लता में,
नीर न भरकर, भर हाला,
प्राणप्रिये, यदि श्राद्ध करो तुम
मेरा, तो ऐसे करना
पीनेवालों को बुलवाकर,
खुलवा देना मधुशाला । । 84 । ।

नाम अगर पूछे कोई तो
कहना बस पीनेवाला,
काम ढालना और ढलाना
सबको मदिरा का प्याला,
जाति, प्रिये, पूछे यदि कोई,
कह देना दीवानों की,
धर्म बताना, प्यालों की ले
माला जपना मधुशाला । । 85 । ।

ज्ञात हुआ यम आने को है
ले अपनी काली हाला,
पंडित अपनी पोथी भूला,
साधू भूल गया माला,
और पुजारी भूला पूजा,
ज्ञान सभी ज्ञानी भूला,
किन्तु न भूला मरकर के भी
पीनेवाला मधुशाला । । 86 । ।

यम ले चलता है मुझको तो,
चलने दे लेकर हाला,
चलने दे साकी को मेरे
साथ लिए कर में प्याला;
स्वर्ग, नरक या जहाँ कहीं भी
तेरा जी हो लेकर चल;
ठौर सभी हैं एक तरह के
साथ रहे यदि मधुशाला । । 87 । ।

पाप अगर पीना, समदोषी
तो तीनों साकी वाला
नित्य पिलानेवाला प्याला,
पी जानेवाली हाला;
साथ इन्हें भी ले चल मेरे
न्याय यही बतलाता है,
कैद जहाँ मैं हूँ, की जाए
कैद वहीं पर मधुशाला । । 88 । ।

शांत सकी हो अब तक, साकी,
पीकर किस उर की ज्वाला,
'और, और' की रटन लगाता
जाता हर पीनेवाला,
कितनी इच्छाएँ हर जाने
वाला छोड़ यहाँ जाता!
कितने अरमानों की बनकर
कब्र खड़ी है मधुशाला । । 89 । ।

जो हाला मैं चाह रहा था,
वह न मिली मुझको हाला,
जो प्याला मैं माँग रहा था,
वह न मिला मुझको प्याला,
जिस साकी के पीछे मैं था
दीवाना, न मिला साकी,

जिसके पीछे मैं था पागल,
हा, न मिली वह मधुशाला । । 90 । ।

देख रहा हूँ अपने आगे
कब से माणिक्रसी हाला,
देख रहा हूँ अपने आगे
कब से कंचन का प्याला,
'बस अब पाया!' कह कह
कब से दौड़ रहा इसके पीछे,
किन्तु रही है दूर क्षितिर्जसी
मुझसे मेरी मधुशाला । । 91 । ।

कभी निराशा का तम घिरता,
छिप जाता मधु का प्याला,
छिप जाती मदिरा की आभा,
छिप जाती साकीवाला,
कभी उजाला आशा करके
प्यासा फिर चमका जाती,
आँखमिचौनी खेल रही है
मुझसे मेरी मधुशाला । । 92 । ।

'आ आगे' कहकर कर पीछे
कर लेती साकीवाला,
होंठ लगाने को कहकर हर
बार हटा लेती प्याला;
नहीं मुझे मालूम कहाँ तक
यह मुझको ले जाएगी,
वर्द्धावृद्धाकर मुझको आगे,
पीछे हटती मधुशाला । । 93 । ।

हाथों में आर्नेजाने में, हाय,
फिसल जाता प्याला,
अधरों पर आर्नेजाने में,
हाय, ढलक जाती हाला;
दुनिया वालो, आकर मेरी
किस्मत की खूबी देखो
रह रह जाती है बस मुझको
मिलतेमिलते मधुशाला । । 94 । ।

प्राप्य नहीं है तो, हो जाती
लुप्त नहीं फिर क्यों हाला,
प्राप्य नहीं है तो, हो जाता
लुप्त नहीं फिर क्यों प्याला;

दूर न इतनी, हिम्मत हाँसूँ,
पास न इतनी, पा जाऊँ;
व्यर्थ मुझे दौड़ाती मरु में,
मृगजल बनकर मधुशाला । । 95 । ।

मिले न, पर, ललचाललचा क्यों
व्याकुल करती है हाला,
मिले न, पर, तरसातरसाकर
क्यों तड़पाता है प्याला,
हाय, नियति की विषम लेखनी
मस्तक पर यह खोद गई
दूर रहेगी मधु की धारा,
पास रहेगी मधुशाला! । । 96 । ।

मदिरालय में कब से बैठा
पी न सका अब तक हाला,
यल सहित भरता हूँ, कोई
किन्तु उलट देता प्याला;
मानवबल के आगे निर्वल
भाग्य सुना विद्यालय में,
'भाग्यप्रबल, मानव निर्वल' का
पाठ पढ़ाती मधुशाला । । 97 । ।

किस्मत में था खाली खप्पर,
खोज रहा था मैं प्याला;
ढूँढ़ रहा था मैं मृगयनी,
किस्मत में थी मृगछाला;
किसने अपना भाग्य समझने
में मुझसा धोखा खाया;
किस्मत में था अवघटमरघट,
ढूँढ़ रहा था मधुशाला । । 98 । ।

उस प्याले से प्यार मुझे जो
दूर हथेली से प्याला,
उस हाला से चाव मुझे जो
दूर अधरमुख से हाला;
प्यार नहीं पा जाने में हैं,
पाने के अरमानों में!
पा जाता तब, हाय, न इतनी
प्यारी लगती मधुशाला । । 99 । ।

साकी के है पास तनिकसी
श्री, सुख, संपत्ति की हाला,

सब जग है पीने को आतुर
लेंले किस्मत का प्याला;
रेलटेल कुछ आगे बढ़ते,
बहुतेरे दबकर मरते;
जीवन का संघर्ष नहीं है,
भीड़ भरी है मधुशाला । । 100 । ।

साकी, जब है पास तुम्हारे
इतनी थोड़ीसी हाला,
क्यों पीने की अभिलाषा से,
करते सबको मतवाला;
हम पिसपिसकर मरते हैं;
तुम छिपछिपकर मुसकाते हो;
हाय, हमारी पीड़ा से है
क्रीड़ा करती मधुशाला । । 101 । ।

साकी, मरगपकर यदि कोई
आगे कर पाया प्याला,
पी पाया केवल दो बूंदों
से न अधिक तेरी हाला,
जीवन भर का, हाय, परिश्रम
लूट लिया दो बूंदों ने,
भोले मानव को ठगने के
हेतु बनी है मधुशाला । । 102 । ।

जिसने मुझको प्यासा रक्खा
बनी रहे वह भी हाला,
जिसने जीवनभर दौड़ाया
बना रहे वह भी प्याला;
मतवालों की जिह्वा से हैं
कभी निकलते शाप नहीं,
दुखी बनाया जिसने मुझको
सुखी रहे वह मधुशाला । । 103 । ।

नहीं चाहता, आगे बढ़कर
छीनूँ औरों की हाला,
नहीं चाहता, धक्के देकर,
छीनूँ औरों का प्याला
साकी, मेरी ओर न देखो
मुझको तनिक मलाल नहीं,
इतना ही क्या कम आँखों से
देख रहा हूँ मधुशाला । । 104 । ।

मद, मदिरा, मधु, हाला सुर्नसुन
कर ही जब हूँ मतवाला,
क्या गति होगी जब अधरों के
नीचे आएगा प्याला,
साकी मेरे पास न आना
मैं पागल हो जाऊँगा;
प्यासा ही मैं मस्त, मुबारक
हो तुमको ही मधुशाला । ।105 । ।

क्या मुझको आवश्यकता है
साकी से माँगूँ हाला,
क्या मुझको आवश्यकता है
साकी से चाहूँ प्याला,
पीकर मदिरा मस्त हुआ तो
प्यार किया क्या मदिरा से!
मैं तो पागल हो उठता हूँ
सुन लेता यदि मधुशाला । ।106 । ।
देने को जो मुझे कहा था,
दे न सकी मुझको हाला,
देने को जो मुझे कहा था
दे न सका मुझको प्याला;
समझ मनुज की दुर्बलता में
कहा नहीं कुछ भी करता,
किंतु स्वयं ही देख मुझे अब
शरमा जाती मधुशाला । ।107 । ।

एक समय संतुष्ट बहुत था
पा मैं थोड़ीसी हाला,
भोलासा मेरा साकी,
छोटासा मेरा प्याला;
छोटेसे इस जग को मेरे
स्वर्ग बलाएँ लेता था,
विस्तृत जग में, हाय गई खो
मेरी नन्हीं मधुशाला । ।108 । ।

बहुतेरे मदिरालय देखे,
बहुतेरी देखी हाला,
भाँतिभाँति का आया मेरे
हाथों में मधु का प्याला,
एकएक से बढ़कर, सुन्दर
साकी ने सत्कार किया,
जँची न आँखों में, पर कोई

पहली जैसी मधुशाला । । 109 । ।

एक समय छलका करती थी
मेरे अधरों पर हाला,
एक समय झूमा करता था
मेरे हाथों पर प्याला,
एक समय पीनेवाले, साकी,
आलिंगन करते थे;
आज बनी है निर्जन भरघट,
एक समय थी मधुशाला । । 110 । ।

जला हृदय की भट्टी खींची
मैंने आँसू की हाला;
छलछल छलका करता इससे
पर्लपल पलकों का प्याला;
आँखें आज बनी हैं साकी,
गाल गुलाबी पी होते;
कहो न विरही मुझको, मैं हूँ
चलतीफिरती मधुशाला । । 111 । ।

कितनी जल्दी रंग बदलती
है अपना चंचल हाला,
कितनी जल्दी रिसने लगता
madhushala हाथों में आकर प्याला,
कितनी जल्दी साकी का
आकर्षण घटने लगता है;
प्रात नहीं थी वैसी, जैसी
रात लगी थी मधुशाला । । 112 । ।

बूँदबूँद के हेतु कभी
तुझको तरसाएगी हाला,
कभी हाथ से छिन जाएगा
तेरा यहा मादक प्याला;
पीनेवाले, साकी की मीठी
बातों में मत आना;
मेरे भी गुण यों ही गाती
एक दिवस थी मधुशाला । । 113 । ।

छोड़ा मैंने पंथमतों को
तब कहलाया मतवाला,
चली सुरा मेरा पग धोने
तोड़ा मैंने जब प्याला;

अब मानी मधुशाला मेरे
पीछेपीछे फिरती है,
क्या कारण? अब छोड़ दिया है
मैंने जाना मधुशाला । । 114 । ।

यह न समझना, पिया हलाहल
मैंने, जब न मिली हाला,
तब मैंने खप्पर अपनाया
ले सकता था जब प्याला;
जले हृदय को और जलाना
सूझा, मैंने मरघट को
अपनाया जब इन चरणों में
लोट रही थी मधुशाला । । 115 । ।

कितनी आई और गई थी
इस मदिरालय में हाला,
टूट चुकी अब तक कितने ही
मादक प्यालों की माला,
कितने साकी अपर्ना अपना
काम ख़तम कर दूर गए;
कितने पीनेवाले आए,
किन्तु वही है मधुशाला । । 116 । ।

कितने होठों को रक्खेगी
याद भला मादक हाला,
कितने हाथों को रक्खेगा
याद भला पागल प्याला,
कितनी शक्लों को रक्खेगा
याद भला भोला साकी,
कितने पीनेवालों में हैं
एक अकेली मधुशाला । । 117 । ।

दर्दर घूम रहा था जब मैं
चिल्लार्ताहाला! हाला!
मुझे न मिलता था मदिरालय,
मुझे न मिलता था प्याला;
मिलन हुआ, पर नहीं मिलनसुख
लिखा हुआ था किस्मत में,
मैं अब जमकर बैठ गया हूँ,
घूम रही है मधुशाला । । 118 । ।

मैं मदिरालय के अन्दर हूँ,

मेरे हाथों में प्याला,
प्याले में मदिरालय विविक्त
करनेवाली है हाला;
इस उधेईबुन में ही मेरा
सारा जीवन बीत गया
मैं मधुशाला के अन्दर या
मेरे अन्दर मधुशाला । ।119। ।

किसे नहीं पीने से नाता,
किसे नहीं भाता प्याला;
इस जगती के मदिरालय में
तरहतरह की है हाला,
अपनी अपनी इच्छा के
अनुसार सभी पी मदमाते;
एक सभी का मदक साकी,
एक सभी की मधुशाला । ।120। ।

यह हाला, कर शांत सके जो
मेरे अन्तर की ज्वाला,
जिसमें मैं विविक्तप्रतिविविक्त
प्रतिपल, यह मेरा प्याला,
मधुशाला वह नहीं, जहाँ पर
मदिरा बेची जाती है,
भेंट जहाँ मस्ती की मिलती
मेरी तो वह मधुशाला । ।121। ।

मतवालापन हाला से ले
मैंने तज दी है हाला,
पागलपन लेकर प्याले से
मैंने त्याग दिया प्याला,
साकी से मिल, साकी में मिल
अपनापन मैं भूल गया,
मिल मधुशाला की मधुता में
भूल गया मैं मधुशाला । ।122। ।

मदिरालय के द्वार ठोंकता
किस्मत का छूँछा प्याला,
गहरी, ठंडी सोंसों भर्रभर
कहता था हर मतवाला,
कितनी थोड़ीसी यौवन की
हाला, हा, मैं पी पाया!
बंद हो गई कितनी जल्दी

मेरी जीवन्मधुशाला । । 123 । ।

कहाँ गया, वह स्वर्गिक साकी,
कहाँ गई सुरभित हाला,
कहाँ गया स्वप्निल मदिरालय,
कहाँ गया स्वर्णिम प्याला!
पीनेवालों ने मदिरा का,
मूल्य, हाय, तब पहचाना!
फूट चुका जब मधु का प्याला,
टूट चुकी जब मधुशाला । । 124 । ।

अपने युग में सबको अनुपम
ज्ञात हुई अपनी हाला,
अपने युग में सबको अदभुत
ज्ञात हुआ अपना प्याला,
फिर भी वृद्धों से जब पूछा
एक यही उत्तर पाया
अब न रहे वे पीनेवाले,
अब न रही वह मधुशाला । । 125 । ।

'मय' को करके शुद्ध दिया
अब नाम गया उसको, 'हाला'
'मीना' को 'मधुपात्र' दिया
'सागर' को नाम दिया 'प्याला',
क्यों न मौलवी चौंके, बिचके
तिलकत्रिपुंडी पंडित जी
'मर्यमहफिल' अब अपना ली है
मैंने करके 'मधुशाला' । । 126 । ।

कितने मर्म जता जाती है
बारबार आकर हाला,
कितने भेद बता जाता है,
बारबार आकर प्याला,
कितने अर्थों को संकेतों
से बतला जाता साकी,
फिर भी पीनेवालों को है
एक पहेली मधुशाला । । 127 । ।

जितनी दिल की गहराई हो
उतना गहरा है प्याला;
जितनी मन की मादकता हो

उतनी मादक है हाला ;
जितनी उर की भावुकता हो
उतना सुन्दर साकी है,
जितना ही जो रसिक, उसे है
उतनी रसमय मधुशाला । । 128 । ।

जिन अधरों को छुए,
बना दे मस्त उन्हें मेरी हाला ;
जिस कर को छू दे, कर दे
विक्षिप्त उसे मेरा प्याला ;
आँख चार हों जिसकी मेरे
साकी से दीवाना हो ;
पागल बनकर नाचे वह
जो आए मेरी मधुशाला । । 129 । ।

हर जिह्वा पर देखी जाएगी
मेरी मादक हाला ;
हर कर में देखा जाएगा
मेरे साकी का प्याला ;
हर घर में चर्चा अब होगी
मेरे मधुविक्रेता की ;
हर आंगन में गमक उठेगी
मेरी सुरभित मधुशाला । । 130 । ।

मेरी हाला में सबने
पाई अपनी अपनी हाला,
मेरे प्याले में सबने
पाया अपना अपना प्याला,
मेरे साकी में सबने
अपना प्यारा साकी देखा ;
जिसकी जैसी रुचि थी उसने
वैसी देखी मधुशाला । । 131 । ।

यह मदिरालय के आँसू हैं,
नहीं नहीं मादक हाला ;
यह मदिरालय की आँखें हैं,
नहीं नहीं मधु का प्याला ;
किसी समय की सुखदस्मृति है
साकी बनकर नाच रही ;
नहीं नहीं कवि का हृदयांगण,
यह विरहाकुल मधुशाला । । 132 । ।

कुचल हसरतें कितनी अपनी,
हाय, बना पाया हाला,
कितने अरमानों को करके
खाक बना पाया प्याला!
पी पीनेवाले चल देंगे,
हाय, न कोई जानेगा,
कितने मन के महल ढहे, तब
खड़ी हुई यह मधुशाला ।। 133 ।।

विश्व, तुम्हारे विषमय जीवन
में ला पाएगी हाला
यदि थोड़ीसी भी यह मेरी
मदमाती साकीवाला,
शून्य तुम्हारी घड़ियाँ कुछ भी
यदि यह गुंजित कर पाई,
जन्म सफल समझेगी अपना
जग में मेरी मधुशाला ।। 134 ।।

वर्डेबड़े नाजों से मैंने
पाली है साकीवाला
कलित कल्पना का ही इसने
सदा उठाया है प्याला,
मार्नदुलारों से ही रखना
इस मेरी सुकुमारी को;
विश्व, तुम्हारे हाथों में अब
सौंप रहा हूँ मधुशाला ।। 135 ।।

मधुशाला के परिशिष्ट ॐ

स्वयं नहीं पीता, औरों को,
किन्तु पिला देता हाला,
स्वयं नहीं छूता, औरों को,
पर पकड़ा देता प्याला,
पर उपदेश कुशल बहुतेरों
से मैंने यह सीखा है,
स्वयं नहीं जाता, औरों को
पहुंचा देता मधुशाला ।। 1 ।।

मैं कायस्थ कुलोद्भव मेरे
पुरखों ने इतना ढाला,
मेरे तन के लोहू में है
पचहत्तर प्रतिशत हाला,
पुश्तैनी अधिकार मुझे है

मदिरालय के आँगन पर,
मेरे दादों परदादों के
हाथ विकी थी मधुशाला । 2 । ।

बहुतों के सिर चार दिनों तक
चढ़कर उतर गई हाला,
बहुतों के हाथों में दो दिन
छलक छलक रीता प्याला,
पर बढ़ती तासीर सुरा की
साथ समय के, इससे ही
और पुरानी होकर मेरी
और नशीली मधुशाला । 3 । ।

पित्र पक्ष में पुत्र उठाना
अर्घ्य न कर में, पर प्याला
बैठ कहीं पर जाना
गंगा सागर में भरकर हाला
किसी जगह की मिट्टी भीगे
तृप्ति मुझे मिल जाएगी
तर्पण अर्पण करना मुझको
पढ़ पढ़ कर के मधुशाला । 4 । ।

डॉ हरिवंशराय अच्चन

=====

श्रद्धांजलियां पाठकों की ओर से

अर्पण तर्पण अंतिम मधुशाला मौन मधुशाला

कविताओं के विस्तृत नभ में
सूरज का कर उजियाला
चिर निद्रा में चला गया कवि
मधुशाला लिखने वाला
मंदिर मस्जिद एक करा कर
जात पात का भेद मिटा
सच्चाई की राह दिखाती
है दुनिया को मधुशाला । 1 । ।

खूब पिलाई तुमने जग को,
भर भर प्यालों में हाला,
खूब बंधे अंगूर लता में,

नाच उठा पीने वाला,
पल भर में वह रंग सुरीले,
स्वप्न सजीले बीत गए,
सजल नयन से आज विदाई,
देती तुमको मधुशाला । । 1 । ।

आज घटों में बिखर गई है,
फिर यम की काली हाला,
आज सुराही तोड़ चुकी है,
मृगनयनी साकीवाला,
आज उठा है एक जगत से,
वह दूजे को जाने को,
आज सजी है अंतिम डोली,
आज है अंतिम मधुशाला । । 2 । ।

- AiBanava Sau@laa <<http://www.anubhuti-hindi.org/kavi/a/abhinavshukla/index.htm>>

बुझा दीप

बुझा दीप मधुशाला वाला
जो करता था उजियाला
कौन बतायेगा हमको अब
पथ वह मदिरालय वाला
पीकर जिसको सभी एक हों
कौन पिलायेगा हाला
अब हरिवंश गये हरिपुर को
छोड़ सकल साकी वाला । । 1 । ।

कम्पित कर हैं सजल नयन हैं
व्यथित आज पीने वाला
कविता की संधी सुगंध को
तडप रही है मधुशाला
मधुशाला को जाने वाले
सदा तुम्हें ही नमन करेंगे
श्रद्धा के कुछ शब्द सुमन ये
अर्पित करता मतवाला । । 2 । ।

<COLOR=000000- Bagavat SarNa EaIvaastva 'SarNa' <<http://www.anubhuti-hindi.org/dishantar/s/sharan/ant.htm>>

सुन कर मची सनसनी स्वर्ग में,
कैसा कवि हाला वाला ।
मदिरालय का गान सुनाता,
साथ लिए साकी वाला ।

सबको अब भविष्य की चिन्ता,
कैसा दिन आने वाला ।
यही रहा तो खुल जाएगी,
गली गली में मधुशाला । । 1 । ।

लाग्व पियें दो लाग्व पियें पर
कभी नहीं घटने वाला
जीवन रस की सतत धार से
अक्षय मधु का यह प्याला
अर्पण तर्पण करता तुझको
पढ़ मधुशाला की हाला
तू न रहा पर तुझको हरदम
याद रखेगी मधुशाला । । 2 । ।

‘अरुण ‘वेखवर’

आदि समय से रही छलकती,
स्वर्गलोक में थी हाला ।
सुर, किन्नर, गन्धर्व, अप्सरा,
ने छक कर कितना ढाला ।
बच्चन के आने के पहले,
सिर्फ नशा ही होता था ।
वातावरण नहीं था कोई,
आज खुली है मधुशाला । । 2 । ।

अमर मधुशाला

अमर हो गया पीनेवाला
हुयी अमर वह मधुशाला
अमर हो गयी अंगूरी वह
हुयी अमर मधु की हाला
सुरा सुराही अमर हो गये
किस्मत की खूबी देखो
अमर हो गयी मादक साकी
हुयी अमर साकीवाला । । 1 । ।

स्वर्गालय में धूम मची है,
नाच रही है सुरवाला ।
देखो सुन्दर गीत सुनाने,
आया कवि हाला वाला ।
अब तो जश्न मनेगा ऊपर,
शब्द मधुर मुखरित होंगें ।
बच्चन तुम क्या गए धरा से,

मौन हमारी मधुशाला । । 3 । ।

अमर हो गया नाज दिग्वाता
वह छोटा मधु का प्याला
अमर हो गयी अदा दिग्वाती
अधरों पर जीवन हाला
“सत्य” प्रेम का पैमाना भी
आज अमर होकर छलका
अमर कवि जग वंदन करता
अमर आपकी मधुशाला । । 2 । ।

‘सत्यनारायण सिंह

मुरझाई अंगूर लताएं,
कहां बची इनमें हाला ।
झोंक समय की खा कर देखो,
टूट गया मधु का प्याला ।
बन्द कपाट, किवाड़, सींग्रचे,
दरवाजे लटका ताला ।
गाने वाला चला गया अब,
बन्द हुई बस मधुशाला । । 4 । ।

‘चन्द्र शेखर त्रिवेदी

=====